Case History method

Nature

व्यक्ति इतिहास विधि एक ऐसी विधि है जिसका उपयोग सामान्य एवं असामान्य दोनों प्रकार के बच्चों एवं व्यक्तियों के अध्ययन में किया जाता है। इस विधि का सबसे अधिक प्रयोग मनोवैज्ञानिक Witmer (विटमर), Anna Freud, Conne (कॉन), Elkis (एल्किस) एवं वुली (Woole) द्वारा किया गया है, वास्तव में व्यक्ति इतिहास child study की एक ऐसी विधि है जो किसी बच्चे की वैयक्तिक समस्याओं के गहरे स्तर पर जाकर उसके व्यवहार और समायोजन की कठिनाइयों को जानने की कोशिश करती है। वर्तमान समय में case history method Education, guidance, counselling and clinical field में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस विधि में बच्चे के past and present जीवन की घटनाओं एवं अनुभूतियों का एक विवरण तैयार किया जाता है। जिसमें स्वयं बालक से उसके माता-पिता, परिवार के सदस्यों, मित्रों, पड़ोसियों एवं चिकित्सकों आदि से बालक के संबंधित सूचनाएँ प्राप्त की जाती है। इन सूचनाओं को क्रमबद्ध रूप देने में बालक के individuals (व्यक्तिक), social, family, schools, genetic (पैतृक) and economic (आर्थिक) आदि बिन्दुओं के संबंध में एक विस्तृत जीवन इतिहास (life history) तैयार किया जाता है। इस प्रकार तैयार विस्तृत life history के आधार पर बालक के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के संबंध में निष्कर्ष की प्राप्ति की जाती है। व्यक्ति इतिहास विधि सामान्य बालकों की अपेक्षा असामान्य एवं कुसमायोजित बच्चों के अध्ययन एवं उनकी विसामान्यताओं के निदान में अधिक उपयोगी है। इस विधि की सहायता से समस्याग्रस्त बच्चों का सही निर्देशन करके उनकी अन्तर्दृष्टि (insight) के विकास में मदद की जाती है जिससे ऐसे बालकों में जीवन की वास्तविकताओं का cognition का विकास हो सके। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण शाखाओं जैसे clinical psy, abnormal psy, and psycho-pathology में इस विधि का सबसे अधिक प्रयोग बच्चों की असामान्यताओं एवं कुसमायोजित व्यवहारों के अध्ययन के लिए किया जा रहा है।

Merits of case history method

व्यक्ति इतिहास विधि में निम्नलिखित गुण पाये जाते हैं, जो इस प्रकार है —

(I) इस विधी का प्रयोग सामान्य एवं असामान्य दोनों प्रकार के बालकों के अध्ययन के लिए सरलता एवं सफलतापूर्वक किया जाता है।
(II) इस विधी में बालक के पिछले एवं वर्तमान जीवन की घटनाओं एवं अनुभवों के आधार पर उनकी समस्याओं का समाधान किया जाता है।
(III) इस विधी के द्वारा कुसमायोजित बच्चों को सुसमायोजित बनाने में सहायता मिलती है।
(IV) इस विधी के द्वारा जीवन पथ से भटके बालकों को जीवन की वास्तविकता का ज्ञान कराया जाता है।

Demerits of Case history method

उपर्युक्त विशेषताओं के होते हुए भी व्यक्ति इतिहास विधी में निम्नलिखित कमियाँ पायी जाती है—
(I) यह विधी वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ विधी है।
(II) इस विधी में अध्ययन का आधार, स्वयं बालक, उसके माता-पिता, शिक्षक एवं पड़ोसियों से प्राप्त सूचनाएँ होती है अतः ऐसी स्थिति में प्राप्त सूचना देने की अपेक्षा छिपाने का प्रयास किया जाता है। विशेष कर माता-पिता अपने बच्चों की गलतियों को छिपाने की कोशिश करते हैं।
(III) इस विधी के द्वारा बालक के व्यवहार पर पड़ने वाले वातावरणीय प्रभावों की अनदेखी की जाती है।
(IV) इस विधी में रिपोर्ट अध्ययनकर्ता द्वारा बनायी जाती है जिस-के कारण उसके पूर्वाग्रह एवं मनोवृत्ति का इस पर प्रभाव पड़ता है अतः इस विधी से प्राप्त निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ हो जाता है।

B.A. Part-III Development Psychology Dr. Usha Choudhary

Types of changes in development

जीवित और क्रियाशील बने रहने के लिए यह जरूरी है कि प्राणी में जीवन पर्यन्त परिवर्तन होता है। ये परिवर्तन शरीर की कोशिकाओं, ऊतकों, रसों, रसायनिक घटकों के निरन्तर बदलाव के रूप में होते हैं। मानव कभी स्थिर नहीं रहता है। गर्भाधान से लेकर मृत्यु के समय तक उसमें अविराम गति से परिवर्तन होते रहते हैं। Piaget (जीन पियाजे, 1971) के अनुसार "स्थिर होने के बजाय परिपक्व होते हुए मानव में निरन्तर और प्रगतिशील परिवर्तन जानुभाविक दशाओं के फलस्वरूप होते रहते हैं और इन परिवर्तनों के फलस्वरूप जटिल अन्तर्क्रियाएँ घटित होती हैं।" (He goes on to explain that, instead of being static a maturing organism undergoes continued and progressive changes in response to experiential conditions and these changes result in complex network of interaction)

प्रत्येक आयु में होने वाले परिवर्तनों में कुछ शुरू की अवस्था में कुछ विकास की चरम सीमा पर तथा कुछ अन्य अवस्थाओं की ओर उन्मुख होते हैं। कुछ परिवर्तन परस्पर संबंधित होते हैं, और एक के घटित होने के साथ दूसरा भी उत्पन्न होता है। ये परिवर्तन केवल शारीरिक क्षेत्र में ही नहीं घटित होते, बल्कि मानसिक क्षेत्र में भी उत्पन्न होते हैं। विकास में होने वाले परिवर्तनों को मुख्य रूप से चार भागों में बाँटा जा सकता है। इन परिवर्तनों का संक्षिप्त वर्णन नीचे इस प्रकार किया गया है —

(1) Change in Size (आकार में परिवर्तन)

आयु वृद्धि के साथ-साथ बच्चों के शरीर, हाथ, पैर, पीठ, पेट, सिर आदि के आकार में कुछ परिवर्तन होते हैं। साथ ही साथ ऊँचाई, मोटाई तथा भार में परिवर्तन होता रहता है। इसी प्रकार आंतरिक अंगों जैसे हृदय, फेफड़े तथा आंतों के आकार में भी परिवर्तन होता रहता है। यही नहीं बच्चे की स्मृति, प्रत्यक्षण, तर्कणा तथा सृजनशीलता कल्पना आदि मानसिक क्रियाओं में भी अनेक प्रकार के परिवर्तन होते हैं। केवल असामान्य परिस्थितियों के कारण ही इस प्रकार का परिवर्तन अवरुद्ध हो सकता है। इन आंतरिक एवं बाह्य अंगों के आकार में परिवर्तन होने के कारण बालक अपनी अनेक शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और भौतिक तथा सामाजिक वातावरण में उचित प्रकार का समायोजन करने के योग्य हो जाता है। उपर्युक्त सभी परिवर्तन विकास एवं विवृद्धि की प्रक्रिया के परिणाम हैं।

(2) Change in Proportion (अनुपात में परिवर्तन)

प्राणी के सभी अंग एक समान गति में परिवर्तनशील नहीं होते हैं। न तो सभी अंग किसी विशेष आयु में पूर्ण परिपक्व हो पाते हैं। भिन्न-2 अंगों में परिपक्वता भिन्न-भिन्न आयु में आती है। इस कारण उसके सभी अंगों के विकास में कोई निश्चित अनुपात नहीं पाया जाता है। विकास द्वारा शारीरिक अंगों के आकार मात्र में ही परिवर्तन नहीं होते, बल्कि शरीर के अनुपातों में भी परिवर्तन घटित हुआ करता है। इसी तरह मानसिक क्रियाओं में भी अनुपात संबंधी परिवर्तन होते हैं। उदाहरण के लिए हम का भार विकास काल में 13 गुणा बढ़ जाता है, जबकि मस्तिष्क का भार केवल चार गुणा ही बढ़ता है। अतः विकास के फल-स्वरूप शारीरिक अंगों के अनुपात में बहुत अधिक अंतर आ जाता है। यदि हम किसी बालक के शरीर की तुलना एवं प्रौढ़ व्यक्ति के शरीर से करें तो अंगों के अनुपात का अंतर भली-भाँति स्पष्ट हो जाएगा। गर्भकालीन अवस्था में तो सिर का आकार अन्य अंगों की अपेक्षा बहुत बड़ा होता है परन्तु विकास-क्रम में शरीर के अन्य भाग सिर की अपेक्षा अधिक विकसित हो जाते हैं।

अतः उपर्युक्त निष्कर्ष हम यह कह सकते हैं कि विकास के कारण शारीरिक अंगों में न केवल आकार संबंधी परिवर्तन घटित होते हैं, बल्कि पर्याप्त मात्रा में शारीरिक अनुपात में भी परिवर्तन होता रहता है। इसी प्रकार मानसिक क्षेत्रों में भी अनुपात की दृष्टि से परिवर्तन होते रहते हैं। उदाहरण के लिए शैशवावस्था में बच्चे की रुचियाँ जितनी अपनी तरफ तथा अपने खिलौनों के प्रति होती है, उतनी अन्य व्यक्तियों एवं वस्तुओं के प्रति नहीं होती। परन्तु बाल्यावस्था में पहुँचते-पहुँचते वे अन्य व्यक्तियों में पर्याप्त रुचि दिखाने लगते हैं। इसी प्रकार प्रारंभ के दो वर्षों में बच्चे प्रायः भय एवं क्लेश के संवेगों का बहुत अधिक प्रदर्शन करते हैं किन्तु बाल्यावस्था में पहुँचने पर ऐसे संवेगों का प्रदर्शन समाप्त होने लगता है और प्रसन्नता आदि में वृद्धि होने लगती है।

(3) Disapperarance of old Features (प्राचीन आकृतियों का लोप)

विकास के अंतर्गत आने वाले परिवर्तनों में कुछ पुरानी आकृतियों का लोप (समाप्त) मुख्य माना जाता है। दूध के दाँतों का गिरना, इसका स्पष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार कुछ भौतिक आकृतियाँ जैसे गले में स्थित thymus gland (थाइमस ग्रंथि) तथा मस्तिष्क के निकट स्थित pineal gland (पीनियल ग्रंथि) का भी धीरे-धीरे

लोप उस समय हो जाता है जब इनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार बचपन में बच्चों का घिसटना और रेंगना (crawling and creeping) और बचपन की ध्वनियाँ (babbling) आदि भी समाप्त हो जाती है। जहाँ तक मानसिक रचनाओं के लोप का प्रश्न है, तो बड़े हो जाने पर बचपन के भय तथा कुछ आदतों का निवारण हो जाता है। बचपन में निर्मित कुछ मनोवृत्तियों में भी बहुत कुछ परिवर्तन होता है।

(4) Acquisition of New Features (नयी आकृतियों की प्राप्ति)

कुछ नवीन आकृतियों की प्राप्ति विकास-क्रम में होने वाले चौथे प्रकार का परिवर्तन है उदाहरण के लिए, बच्चों में स्थायी दाँतों का निकलना, दाढ़ी-मूँछों का निकलना तथा उछलने, कूदने, दौड़ने, भागने, तैरने और चढ़ने की क्षमताओं का उदय नयी तरह के शारीरिक परिवर्तन हैं जो विकास-क्रम में बच्चों को प्राप्त होते हैं। इनमें से अधिकांश क्षमताएँ maturation (परिपक्वता) और कुछ learning के कारण उत्पन्न होती हैं। इसी प्रकार मानसिक स्तर पर जिन नवीन गुणों को बालक अर्जित करता है। उनमें से मुख्य हैं— नैतिकता, चारित्रिक, जिज्ञासा, सहनशीलता तथा नयी वस्तुओं एवं घटनाओं के प्रति जिज्ञासा। इन चार प्रकार के परिवर्तनों का बच्चों के जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। यदि ये परिवर्तन घटित न हो तो बच्चों के लिए अपने भावी जीवन की नयी परिस्थितियों में स्वयं को समायोजित कर सकना कठिन हो जाएगा। प्रकृति के इस सुन्दर प्रबन्ध के कारण ही बच्चे स्वस्थ जीवन प्राप्त कर पाते हैं।